17 जनवरी 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 20 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (द्वितीय), 2018 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की वार्षिक –

साहित्यिक व खेलकूद प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय द्वारा दिनाँक 2 जनवरी से 10 जनवरी 2018 तक विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई। दिनांक 2 जनवरी को महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा प्रतियोगिताओं का उद्घाटन हुआ।

इस अवसर पर पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्री ताराचंदजी सौगानी, श्री राहुलजी गंगवाल आदि महानुभाव उपस्थित थे।

सभी प्रतियोगिताओं का विवरण निम्नानुसार है –

(1) तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग) – दिनांक 2 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में आप्त अनुशीलन जैन ने प्रथम एवं पवित्र जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती कमला भारिल्ल ने की। निर्णायक पण्डित प्रमोदजी शास्त्री व पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ थे। संचालन शुभांशु जैन व शशांक जैन ने किया।

(2) संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता – दिनांक 3 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में अंकुर जैन खड़ैरी ने प्रथम एवं पारस जैन खेकड़ा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष वाई. एस. रमेश (अध्यक्ष-शिक्षाशास्त्री विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान) एवं मुख्य अतिथि पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर थे। निर्णायक श्री राकेशकुमारजी (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान) व पण्डित शांतिकुमारजी पाटील थे। संचालन मंथन गाला व सिद्धार्थ जैन ने किया।

(3) अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता – दिनांक 4 जनवरी को प्रात: हुई इस प्रतियोगिता में उपाध्याय वर्ग में प्रथम स्थान पल द्विवेदी एवं द्वितीय स्थान अनिमेष भारिल्ल ने तथा शास्त्री वर्ग में प्रथम स्थान मंथन गाला एवं द्वितीय स्थान अनुभव जैन ने प्राप्त किया। कार्यक्रम में उपाध्याय वर्ग के अध्यक्ष अनुपमा राजौरिया एवं शास्त्री वर्ग के अध्यक्ष डॉ. संजीवजी गोधा थे। उपाध्याय वर्ग के निर्णायक कु. प्रतीति पाटील व सर्वज्ञ भारिल्ल एवं शास्त्री वर्ग के निर्णायक श्रुति पारीक व सौम्या शर्मा थीं। कार्यक्रम का संचालन सम्मेद जैन व अमन जैन ने किया।

(4) अनिवार्य भाषण प्रतियोगिता – दिनांक 4 जनवरी को रात्रि में आयोजित इस प्रतियोगिता में अनर्घ्य जैन ने प्रथम एवं आयुष जैन खतौली ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने की। निर्णायक पण्डित शांतिकुमारजी पाटील एवं जिनकुमारजी शास्त्री थे। संचालन सौरभ जैन व अंकुश जैन ने किया।

(5) छंदपाठ प्रतियोगिता – दिनांक 5 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में अक्षय जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) प्रथम एवं संयम जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) द्वितीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री कुलदीपजी शर्मा तथा निर्णायक पण्डित शांतिकुमारजी पाटील व श्री श्यामसुन्दरजी पारीक थे। प्रतियोगिता का संचालन नमन जैन एवं प्रतीक जैन ने किया।

(6) अंत्याक्षरी प्रतियोगिता – दिनांक 6 जनवरी को प्रात: हुई इस प्रतियोगिता में समकित जैन व स्वानुभव जैन ने प्रथम तथा अभय जैन व

(शेष पृष्ठ 6 पर ...)

हार्दिक आमंत्रण : अवश्य पधारें !

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का **छठवाँ वार्षिक महोत्सव शुक्रवार, दिनांक 23 फरवरी से रविवार, दिनांक 25 फरवरी 2018 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस मंगल महोत्सव में पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

2

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

पुण्य के उदय में हर्ष मानना, पाप के उदय में खेद खिन्न होना, शरीर की संभाल में लगे रहना, देह की वृद्धि में प्रसन्नता और देह की क्षीणता में अप्रसन्नता! भला इन्हें कौन पाप गिनता है? परन्तु पण्डित बनारसीदास ने इन्हें ही सप्त व्यसन जैसे महापाप में गिनाया है –

अशुभ में हार शुभ में जीत यही है द्यूतकर्म,
देह की मगनताई यहै माँस भखिबो।
मोह की गहल सों अजान यहैं सुरापान,
कुमति की रीति गणिका को रस चखिबो।।
निर्दय ह्वै प्राण घात करबो यहै शिकार,
पर-नारि संग पर-बुद्धि को परखिबो।
प्यार सौं पराई सौंज गहिबे की चाह चोरी,
ऐ ही सातों व्यसन विडारि ब्रह्म लखिबो।।

जो मिथ्या मान्यता के कारण अशुभ उदय आने पर प्रतिकूल परिस्थितियों में अपनी हार मानता है तथा शुभोदय में अनुकूल स्थिति में अपनी जीत मानता है; वह एक तरह से जुआरी ही है; जो हर्ष-विषाद रूप परिणाम जुआ की जीत-हार में होते हैं, वैसे ही हर्ष-विषाद के परिणाम जिसने पुण्य-पाप के उदय में किए तो फल तो परिणामों का ही मिलता है न? इस कारण जुआ में हर्ष-विषाद और पुण्य-पाप के उदय से हुए हर्ष-विषाद में कोई अन्तर नहीं है। इसी तरह मांसल देह में एकत्व व ममत्वबुद्धि से एवं सुख की मान्यता से उसमें मग्न होना भी माँस खाने जैसा व्यसन ही है?

शराब पीकर मूर्च्छित हुआ या मोह में मूर्च्छित – दोनों में कोई अन्तर नहीं है, मूर्च्छा तो दोनों में हुई न! अतः मोही जीव का मोह भी एक प्रकार से शराब पीने जैसा व्यसन ही है।

ये कुबुद्धि या व्यभिचारणी बुद्धि वैश्या व्यसन जैसा है। निर्दय होकर किसी भी प्राणी की हिंसा में प्रवृत्ति शिकार व्यसन है तथा दूसरों की बुद्धि की परख करने को परस्त्री सेवन व्यसन कहा है। दूसरों की वस्तु रागवश ग्रहण करना चोरी व्यसन है। कवि का कहना है कि इन सात व्यसनों में सुख की मान्यता के त्यागपूर्वक आत्मा को जाना/पहचाना जा सकता है।

इसी प्रकार पुत्र-पुत्रियों से प्रीति करना, उनमें ममत्व रखना, उनके वियोग में दुःखी होना, देह में एकत्व रखना उसके ही संभालने में रत रहना, शरीर में रोगादि होने पर दुःखी होना, शारीरिक पीड़ा होने पर व्याकुल हो उठना इसमें भी पाप है, ऐसा बहुत ही कम लोग जानते हैं, जबकि ये आर्तध्यान रूप पाप परिणाम है। पंचेन्द्रिय के भोगों में सुख बुद्धि होना, उन्हें जुटाने की कामना में लगे रहना भी कोई पाप है, यह बात भी लोगों की समझ के बाहर ही है। अन्यथा हिंसादिक की तरह इसे क्यों नहीं छोड़ देते? तथा आत्मा में रागादिक की उत्पत्ति ही हिंसा है, इस हिंसारूप पाप परिणामों की पहचान हमें नहीं है, बस ये ही कुछ ऐसे कारण हैं कि जिनके कारण हम दिन-रात पाप करते हुए भी स्वयं को पापी नहीं मान पाते और जब इन पापों का परिणाम (फल) जीवन में आता है तब आश्चर्य होता है कि **''अरे! मैंने ऐसे क्या पाप किए?''**

आश्चर्य इसका नहीं होना चाहिये कि कौन से पाप किये, बल्कि आश्चर्य तो यह है कि मिथ्यामान्यतावश दिन-रात पाप भाव में रहते हुए ऐसा महान पुण्य कब बाँध लिया, जिससे यह मनुष्य पर्याय, उत्तम कुल, जिनधर्म की शरण और धर्म के अनुकूल वातावरण प्राप्त कर लिया? यह अनुकूलता निश्चय ही कोई महान् पुण्य का फल है, यह मौका अनन्त/असंख्य प्राणियों में किसी एकाध को ही मिलता है जिसे हम प्राप्त करके प्रमाद में खो रहे हैं। यदि यह अवसर चूक गये तो ...

''यह मानुष पर्याय सुकुल सुनिवो जिनवाणी।
इह विधि गये न मिले सुमणि ज्यों उदधि समानी।।''

एक दिन मौका पाकर मैंने उसे यह सब समझने के लिए प्रेरित किया और प्रवचन में पहुँचने की सलाह दी तो सौभाग्य से उसने मेरी बात मान ली और प्रवचन में आना प्रारंभ किया। धीरे-धीरे उसे भी रुचि लग गई। एक दिन प्रवचन में निकला –

''यह एक नियम है कि ध्यान के बिना कोई भी संसारी जीव नहीं है। कोई न कोई ध्यान प्रत्येक प्राणी में पाया जाता है। यदि व्यक्ति का अभिप्राय, मान्यता सही नहीं है तो उसे आर्त-रौद्रध्यान ही होते हैं, क्योंकि धर्मध्यान तो मिथ्या मान्यता में होता ही नहीं है। धर्मध्यान तो सम्यक्दृष्टि जीवों के ही होता है। सामान्य जीवों के मिथ्यात्व की भूमिका में तो निरन्तर आर्त व रौद्रध्यान ही होते

हैं इनमें रौद्रध्यान जो कि पापों में आनंद मानने रूप होता है, सदा अशुभ या पाप रूप ही होता है। आर्तध्यान दुःख शोक रूप होता है, इसमें शुभ-अशुभ का भेद पड़ता है इसमें अज्ञानियों के तो अधिकतर पाप रूप परिणाम ही रहते हैं, अतः भले ही प्रगट रूप में पाप न किये हों फिर भी अभिप्राय (मान्यता) में तो निरन्तर पाप रूप ही परिणाम रहते हैं, उन्हीं में कर्मों की स्थिति व अनुभाग (फल देने की शक्ति) अधिक पड़ती है। तदनुसार जीवन में दुःख आना स्वाभाविक ही है। करणानुयोग शास्त्रानुसार जितना बीच-बीच में शुभभाव होता है उतनी राहत तो असाध्य रोगों व दुःखों के बीच में भी मिल ही जाती है, पर उस सागर जैसे दुःख में इस बूँद जैसे सांसारिक सुख का क्या मूल्य? इससे किसी प्रकार भी संसार के दुःख से छुटकारा नहीं मिल सकता। ऐसी स्थिति में इस जीव को सुखी होना हो तो पुण्य पाप परिणामों की पहचान के लिए जिनवाणी का अभ्यास अवश्य करना चाहिए। पण्डित भागचन्दजी ठीक कहते है -

अपने परिणामनि की संभाल में, तातें गाफिल मत हो प्राणी।

यहाँ 'गाफिल' शब्द के दो अर्थ हैं एक तो सीधा-सादा यह कि परिणामों की संभाल में सावधान रहो, अपने शुभाशुभ परिणामों को पहचानों और अशुभ भावों से बचो। दूसरा अर्थ है कि शुभाशुभ परिणामों में ही गाफिल (मग्न) मत रहो, अपने परिणामी द्रव्य को पहचानों तभी परिणाम हमारे स्वभाव सन्मुख होंगे।''

यह प्रवचन सुनते ही लक्ष्मीनन्दन को उसके प्रश्न का उत्तर तो मिल ही गया। साथ ही सन्मार्ग में अग्रसर होने की रुचि भी जागृत हो गई और वह पत्नी के साथ प्रतिदिन प्रवचन सुनने आने लगा। ॐ नमः।

नित्य देव दर्शन क्यों?

आज का अधिकांश पढ़ा-लिखा वर्ग भौतिकवादी व भोगवादी होता जा रहा है। भौतिकवाद व भोगवाद में ही उसे सभ्यता व आधुनिकता दिखाई देती है। सवेरे उठने के पहले बिना मुँह धोये उन्हें बेड-टी (बिस्तर पर ही चाय) चाहिए और बिना स्नान किए हेवी-नास्ता। फिर टी.वी., न्यूजपेपर्स, यदि समय हुआ तो मेग्जीन्स (पत्र-पत्रिकायें व उपन्यास) यही सब उनका स्वाध्याय है। शेविंग, स्नानादि नित्य कर्मों में भले ही घन्टों बितादें; परन्तु बाथरूम से निकलकर सीधे किचिन (रसोईघर) में ही जा विराजेंगे, मानो मंदिर से तो इन्हें कोई सरोकार ही नहीं है। देवदर्शन नाम की चीज तो इनकी दैनिकचर्या में शामिल ही नहीं है।

काश! किसी आगन्तुक या मेहमान ने इस कारण दूध-नास्ता नहीं लिया कि **वह देव-दर्शन के बिना कुछ भी नहीं लेता** तो बेचारा वह व्यक्ति उन आधुनिक, सभ्य महाशय की नजरों में एकदम बेकवर्ड (पुरातन पन्थी) असभ्य किंवा मूर्ख नजर आता है।

क्या करें ऐसी सभ्यता का? क्या कहें उन फारवर्ड (आधुनिक) लोगों से? कैसे समझायें उन पढ़े-लिखे समझदारों को? जो स्वयं को समझदार, पढ़ा-लिखा, सभ्य व आधुनिक मान बैठे हैं। और इस सभ्यता व आधुनिकता की आड़ में भूल बैठे हैं उन महान आदर्शों को, जिनके दर्शनों से, जिनके स्मरण से अथवा जिनकी प्रेरणा से पापी जीव पुण्यात्मा बन जाते हैं, पतित-आत्मा पावन बन जाते हैं, पामर प्राणी परमात्मा तक बन जाते हैं। वे हमारे आदर्श हैं सच्चे देव, सच्चे शास्त्र एवं सच्चे गुरु।

ये आधुनिक लोग निरे नास्तिक नहीं हैं, कभी-कभी त्योहारों उत्सवों अथवा धार्मिक पर्वों में ये ''शौकिया'' मन्दिर जाते हैं और जब कभी इन्हें कोई मुसीबत आ घेरती है या फिर किसी वस्तु विशेष के आकांक्षी होते हैं, तब ये लोग 'भगवान' को अवश्य याद करते हैं, ऐसे समय इन्हें-संकट मोचक 'भक्तामर पाठ' आदि भी याद आते हैं। तब ये तीर्थ यात्रायें करते, मनोतियाँ मनाते, घी के दीपक चढ़ाते, अपने संकट मोचक प्रभु को मनाने के लिए जो भी कर सकते हैं, सब करने को तत्पर रहते हैं। परन्तु उन्हें नहीं मालूम कि कामना सहित स्वार्थ को लेकर किये गये धार्मिक कार्य कोई अर्थ नहीं रखते। ऐसा करने से देव-दर्शन, अर्चन व पूजन आदि का उद्देश्य भी पूरा नहीं होता है; क्योंकि वीतरागी भगवान उनके इन कार्यों से प्रसन्न होकर उनका दुःख दूर नहीं करते, भक्तों का दुःख दूर करें – ऐसा उनका स्वभाव ही नहीं है।

जहाँ एक ओर पढ़े-लिखों की यह स्थिति है, वहीं दूसरी ओर रूढ़िवाद के हामी कुछ लोग देव-दर्शन की प्रतिज्ञा लेकर मात्र उस प्रतिज्ञा के निर्वाह करने में जान तक लगा देते हैं; क्योंकि प्रतिज्ञा लेने वालों की भी शास्त्रों में खूब प्रशंसा की है, परन्तु वह प्रशंसा-प्रतिज्ञा न लेने वालों की अपेक्षा से की गई है। इससे अधिक उस प्रशंसा का और कुछ अर्थ नहीं है। (क्रमशः)

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (9)

स्वयं सबकुछ परखना संभव नहीं है, तो निर्णय कैसे करें?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

जगत की प्रत्येक भोग सामग्री के विषय में इस निष्कर्ष पर पहुंचे बिना कि इसमें सुख नहीं है, दृढता के साथ इस निष्कर्ष पर पहुंचना संभव नहीं है कि संसार में सुख है ही नहीं और प्रत्येक भोग सामग्री न तो किसी को उपलब्ध है और न ही किसी अकेले के लिये उन सबको भोगकर परीक्षा करना ही संभव है, तब आखिर कोई कैसे निर्णय करे, कैसे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि संसार में सुख है ही नहीं।

उक्त स्थिति में हमें तर्क, युक्ति और आगम का सहारा लेना होगा। जो जीवन हम स्वयं नहीं जी सकते हैं, जो अनुभव हम स्वयं नहीं कर सकते हैं, जो भोग हम स्वयं भोगकर नहीं देख सकते हैं, वे किसी न किसी ने तो अवश्य ही भोगे हैं न! इससे पहिले कि हम स्वयं उन भोगसामग्रियों की ओर एक अंधी दौड़ लगाना शुरु करें, हम यह देखें कि जिन लोगों के पास आज भी वह सामग्री उपलब्ध हे, जो लोग आज भी वे भोग भोग रहे हैं वे लोग कितने सुखी हैं?

कहीं ऐसा न हो कि कदाचित् हम अपना सारा जीवन झोंककर वह सब उपलब्ध कर भी लें और तब हमें पता लगे कि ''नहीं, इसमें भी वह मजा नहीं है जिसकी हमें तलाश थी, जिसकी हमने कल्पना की थी'' तब क्या होगा?

यह संभव नहीं है कि उक्त सभी प्रकार के उदाहरण हमें प्रत्यक्ष देखने को मिल जाएं, हम स्वयं उन्हें जी पाएं, भोग पाएं। ऐसी स्थिति में हमें तर्क और अनुमान का सहारा लेना होगा, इतिहास का सहारा लेना होगा, साहित्य का और आगम का सहारा लेना होगा। **(तर्क, अनुमान और आगम को भी तर्क शास्त्र में प्रमाण माना गया है)** हमारे प्रथमानुयोग के ग्रंथों में शलाकापुरुषों से लेकर जनसामान्य तक अनेकों ऐसे उदाहरण मौजूद हैं जिन्हें वह सब कुछ उपलब्ध था जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं, जिसमें हमें सुख दिखाई देता है।

पुराणों में हमें तीर्थंकरों, चक्रवर्तियों, कामदेवों, नारायण, प्रतिनारायण और बलभद्रों के जीवन का वर्णन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, उनके जीवन में उत्पन्न हुई प्रत्येक स्थिति और परिस्थिति का वर्णन है। हम जानते हैं कि 63 शलाका पुरुष उन महापुरुषों में हैं, जिनके पास पुण्य और तद्जनित उस समस्त अनुकूल संयोगों और सामग्री की प्रचुरता होती है, जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति उक्त संयोगों के बीच भी सुखी नहीं है तो संसार में अन्यत्र सुख की परिकल्पना व्यर्थ है। उक्त ग्रंथों को पढकर हम जान सकते हैं कि उक्त संयोगों और भोगसामग्री के बीच वे शलाका पुरुष जिन्हें इतिहास और संस्कृति में भगवान के समकक्ष दर्जा प्राप्त है, कितने सुखी थे?

जाहिर है कि वे उन भोगों के बीच रहकर सुखी नहीं थे, अन्यथा वे क्यों उन्हें ठुकराकर दीक्षा धारण करते, जंगल में जाते।

जब वे ही सुखी नहीं थे तो हम कैसे उन संयोगों के साथ सुखी हो पायेंगे?

तब सुखी होने के लिये क्या करना होगा?

वही जो उन सबने भी किया?

उन्होंने क्या किया?

संसार के भोगों से दृष्टि हटाकर, उन्हें ठुकराकर आत्म साधना के मार्ग पर आगे बढे। यही हमें भी करना होगा।

इसप्रकार इस लोक में (मनुष्य पर्याय में) उपलब्ध भोग सामग्री के बारे में प्रत्यक्ष, तर्क और अनुमान के आधार पर निर्णय कर लेने के बाद भी संसार में सुख की कल्पना की हमारी उड़ान थमेगी नहीं। **अब हमें स्वर्गों की याद आयेगी। हमें लगेगा कि ''मनुष्य की तो आखिर सीमाएं हैं भले ही वह तीर्थंकर या चक्रवर्ती ही क्यों न हो, मनुष्य तो आखिर मनुष्य ही है पर स्वर्ग तो सुखों की खान है'' और हम स्वर्ग की चाहत में पुण्यार्जन करने के प्रयासों में जुट जायेंगे।**

अब मरे बिना तो स्वर्ग मिलता नहीं है और हम अब एक बार फिर मरकर स्वयं स्वर्ग जाकर अनुभव करने का इन्तजार कर नहीं सकते हैं। यूं भी हम पहिले भी अनेकों बार उक्त स्वर्गों के भी चक्कर लगा ही आये हैं, क्या हमें तब सुख मिला, क्या हमने तब कोई निष्कर्ष निकाला, क्या हमें तब का कोई अनुभव याद है? नहीं न!

यदि तब कुछ न मिला तो अब कैसे मिलेगा? अब तो हमें अभी, इसी जीवन में सच्चा सुख प्राप्त करने का उपक्रम करना है।

तब हम क्या करें?

हमें एक बार फिर माँ जिनवाणी की शरण लेनी होगी, हमारे करणानुयोग के ग्रंथों में स्वर्ग के भोगों का वर्णन है और उन्हीं में यह भी वर्णन है कि उन भोगों के बीच वे स्वर्गवासी लोग कितने सुखी-संतुष्ट या दु:खी हैं। हम उन ग्रंथों के माध्यम, तर्क और युक्ति के आधार पर स्वर्गादिक का अनुभव करके इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि संसारमें सुख है ही नहीं।

इसप्रकार संसार में सुख की कल्पना ही जब शेष न रहे तब ही सुख के अभिलाषी इस जीव को (हमें) इस कथित सांसारिक सुख से परे किसी पारलौकिक सुख की तलाश करने की भावना उत्पन्न होगी।

किसी भी तथ्य के बारे में सही निष्कर्ष पर पहुंचने की यही प्रक्रिया है।

तर्कशास्त्र में किसी वस्तु की परीक्षा करके किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिये निम्नलिखित प्रमाणों का उल्लेख है -

प्रत्यक्ष, स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान और आगम

उक्त में प्रत्यक्ष तो मात्र **केवलज्ञान** है। स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क और अनुमान **मतिज्ञान** के भेद हैं तथा आगम **श्रुतज्ञान** का भेद है।

हमारे पास केवलज्ञान तो है नहीं, आज तो हमारे पास केवली भी उपलब्ध नहीं हैं और न ही वे सभी को, सदा और सर्वत्र उपलब्ध हो सकते हैं। यूं भी अन्य केवली का उपदेश हमारे लिये तो श्रुतज्ञान या आगम है, उनका (प्रत्यक्ष केवली का भी) केवलज्ञान उनके लिये प्रत्यक्ष है; पर हमारे लिये नहीं, हमारे लिये तो वह परोक्ष ही है। इसप्रकार हमारे अब सिर्फ श्रुतज्ञान और मतिज्ञान ही शेष रह जाते हैं, जिनके आधार पर हमें सही निष्कर्ष पर पहुंचना है।

यदि हम संक्षेप में अपनी भाषा में उक्त प्रमाणों को समझने का प्रयास करें तो अपने पूर्व अनुभव का याद आना स्मृति कहलाता है और वर्तमान अनुभव के साथ उसकी संधि बैठाने को प्रत्यभिज्ञान कहते हैं। स्मृति और प्रत्यभिज्ञान के आधार पर तार्किक व्याख्या (तर्क) करके निकाले गये निष्कर्ष को अनुमान कहते हैं।

केवली भगवान के उपदेशों को और उनके आधार पर रचे गये शास्त्रों (उपदेशों) को आगम कहा जाता है।

यदि आप तनिक सूक्ष्मता से विचार करेंगे तो पायेंगे कि संसार/दु:ख के बारे में अंतिम निष्कर्ष तक पहुंचने के लिये हमने भी इन्हीं चरणों (Steps) का सहारा लिया है।

इसप्रकार अपनी कल्पना में संसार में सुख की हर संभावना को निर्मूल कर लेने के बाद सच्चे सुख की सच्ची खोज प्रारम्भ होती है।

क्या है वह सच्चा सुख, वह कैसे प्राप्त हो सकता है, जानने के लिये पढ़ें इस शृंखला की अगली कड़ियाँ... (क्रमश:)

'धन्य महापुरुष' का प्रकाशन

'श्री शिखरचंद स्मृति ग्रंथ भेंट योजना' ग्रंथमाला के अन्तर्गत 'धन्य महापुरुष' पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है, जिसमें धन्यकुमार, यशोधर एवं सुदर्शन - इन 3 महापुरुषों के कथानक को ज्ञान-वैराग्य-अध्यात्म की शैली में पण्डित अरुणजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इसका मूल्य 30 रुपये है; सभी ब्रह्मचारी भाई-बहनों हेतु नि:शुल्क उपलब्ध है। **प्राप्ति हेतु संपर्क सूत्र** - श्री शिखरचंद स्मृति ग्रंथ भेंट योजना, द्वारा डॉ.दीपक जैन 'वैद्य', सी-115, सावित्री पथ, बापूनगर, जयपुर 302015, मोबाइल-9352990108

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

वेदी शिलान्यास सानन्द संपन्न

दलपतपुर-सागर (म.प्र.) : यहाँ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर का शिलान्यास, स्वाध्याय भवन, पाठशाला भवन एवं वेदी शिलान्यास दिनांक 4 जनवरी 2018 को सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा नियमसार पर प्रवचन का लाभ मिला।

शिलान्यास विधि के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित संवेदजी शास्त्री, पण्डित विपुलजी शास्त्री सागर, पण्डित निकलेशजी शास्त्री दलपतपुर, सुश्री अनुभूति शास्त्री दलपतपुर, शाश्वत बालिका प्रज्ञा मोदी आदि के सहयोग से संपन्न हुये।

संपूर्ण कार्यक्रम में दलपतपुर जैन समाज, मकरोनिया-सागर, बण्डा, शाहगढ, टीकमगढ व आसपास के समस्त मुमुक्षु मण्डलों का विशेष सहयोग रहा।

नेट (जे.आर.एफ.) में चयन

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक वीरेन्द्र शास्त्री, बकस्वाहा का जैनदर्शन विषय से नेट (जे.आर.एफ.) परीक्षा में चयन हो गया है। इसके अतिरिक्त साकेत शास्त्री जयपुर व राहुल जैन खड़ैरी ने जैनदर्शन से तथा निलय शास्त्री बरायठा व नीलेश जैन उदयपुर ने संस्कृत विषय से नेट परीक्षा उत्तीर्ण की।

इस उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना!

वैराग्य समाचार

गढाकोटा (म.प्र.) निवासी श्रीमती शांतिबाई का दिनांक 4 जनवरी 2018 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप गढाकोटा मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री चक्रेशजी की माताजी थीं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1101/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

21 जनवरी	जयपुर - दिगम्बर जैन संस्कृत कॉलेज, सांगानेर	
27 जनवरी	जयपुर-प्राकृत भारती	सेमिनार (अनेकान्त एवं स्याद्वाद)
11 से 15 फरवरी	ललितपुर	पंचकल्याणक
17 से 20 फरवरी	श्रवणबेलगोला	महामस्तकाभिषेक
23 से 25 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव
28 फर.से 2 मार्च	कोटा (मुमुक्षु आश्रम)	वार्षिक मेला (होली)
3 से 5 मार्च	इन्दौर (ढाईद्वीप)	प्रवचनसार विधान
15 से 20 अप्रैल	मकरोनिया-सागर	पंचकल्याणक

(पृष्ठ 1 का शेष...)

अंकुश जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री ताराचंदजी सौगानी थे। निर्णायक संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा एवं अनेकान्तजी भारिल्ल थे। संचालन सागर जैन व अनेकान्त जैन ने किया।

(7) तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग) – दिनांक 6 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में संयम जैन ने प्रथम एवं पारस जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने की तथा निर्णायक के रूप में संजयजी सेठी व श्री पी.सी. जैन उपस्थित थे। संचालन समकित जैन व दिवस जैन ने किया।

(8) शोधपत्र वाचन प्रतियोगिता – दिनांक 7 जनवरी को प्रातः हुई इस प्रतियोगिता में अमन जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने प्रथम एवं अनुभव जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. श्रीयांसजी सिंघई ने की। निर्णायक के रूप में पण्डित अरुणजी शास्त्री, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', वीरेन्द्रजी शास्त्री, अच्युतकांतजी शास्त्री व चर्चितजी शास्त्री उपस्थित थे। संचालन मधुर जैन व विकेश जैन ने किया।

(9) चित्रकला प्रतियोगिता – दिनांक 7 जनवरी को दोपहर में हुई इस प्रतियोगिता में अर्पित जैन ने प्रथम एवं कु. स्वस्ति सेठी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। संचालन दिवस जैन ने किया।

(10) काव्यपाठ प्रतियोगिता – दिनांक 7 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में पीयूष जैन टडा ने प्रथम एवं अनुभव जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अध्यक्ष के रूप में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं मुख्य अतिथि के रूप में श्री अतुलभाई खारा यू.एस.ए. उपस्थित थे। निर्णायक श्री अखिलजी बंसल एवं जिनकुमारजी शास्त्री थे। संचालन अभय जैन व पारस जैन ने किया।

(11) निबन्ध प्रतियोगिता – दिनांक 8 जनवरी को दोपहर में आयोजित इस प्रतियोगिता में निखिल जैन व पारस जैन ने प्रथम एवं अंकुर जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना उपस्थित थे। संचालन दिवस जैन ने किया।

(12) भजन प्रतियोगिता – दिनांक 8 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में विकेश जैन ने प्रथम एवं तुषार जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राकेशकुमारजी शर्मा ने की। निर्णायक श्री राजकुमारजी संघी व ज्योति जैन थे। संचालन मंथन गाला ने किया।

(13) नाट्य प्रतियोगिता – दिनांक 9 जनवरी को रात्रि में आयोजित इस प्रतियोगिता में शास्त्री द्वितीय वर्ष ने प्रथम एवं शास्त्री तृतीय वर्ष ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अध्यक्ष के रूप में श्री अनिलजी मारवाडी एवं मुख्य अतिथि के रूप में श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई व अनुभवप्रकाशजी भारिल्ल उपस्थित थे। निर्णायक के रूप में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील एवं सर्वज्ञ भारिल्ल उपस्थित थे। संचालन नमन जैन व सिद्धार्थ जैन ने किया।

(14) शलाका एवं कण्ठपाठ प्रतियोगिता – दिनांक 10 जनवरी को प्रातः हुई इस प्रतियोगिता में प्रतीक जैन ने प्रथम एवं अमन आरोन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने की। निर्णायक के रूप में जिनेन्द्रजी शास्त्री उपस्थित थे। संचालन संदीप जैन ने किया।

खेलकूद प्रतियोगिताएं

इसी क्रम में दिनांक 24 दिसम्बर 2017 से 1 जनवरी 2018 तक खेलकूद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' गीत के साथ हुआ। इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, जिनकुमारजी शास्त्री, अच्युतकांतजी शास्त्री आदि महानुभाव उपस्थित थे। दिनांक 26 दिसम्बर को श्री रतनदीप क्रिकेट स्टेडियम जगतपुरा में श्री प्रदीपजी जैन परिवार के द्वारा क्रिकेट प्रतियोगिता का उद्घाटन हुआ।

क्रिकेट प्रतियोगिता में विजेता शास्त्री द्वितीयवर्ष की आत्मन् टीम एवं उपविजेता उपाध्याय कनिष्ठ की जिनागम टीम रही। **बॉलीवॉल प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर शास्त्री तृतीय वर्ष की ध्रुव टीम तथा द्वितीय स्थान पर शास्त्री द्वितीय वर्ष की आत्मन् टीम रही। **कबड्डी प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर शास्त्री द्वितीय वर्ष एवं द्वितीय स्थान पर उपाध्याय वरिष्ठ रही। **स्लो साइकिल प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर जगदीशन चेन्नई तथा द्वितीय स्थान पर दीपम जैन खतौली रहे। **तस्तरी फेंक प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर आयुष जैन पीपरिया एवं द्वितीय स्थान पर आकाश जैन हलाज रहे। **तीन पैर दौड़ प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर सागर पाटील व आकाश हलाज एवं द्वितीय स्थान पर समकित जैन व हितन्कर जैन रहे। **शतरंज प्रतियोगिता** प्रथम स्थान पर अमन जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर प्रतीक जैन विदिशा रहे। **कैरम प्रतियोगिता (एकल)** में प्रथम स्थान पर आकाश हलाज एवं द्वितीय स्थान पर जगदीशन चेन्नई रहे। **कैरम प्रतियोगिता (युगल)** में प्रथम स्थान पर शैलेष बेलोकर व चेतन जैन एवं द्वितीय स्थान पर श्रेणिक लट्ठे व पीयूष जैन टडा रहे। **बैडमिंटन प्रतियोगिता (एकल)** में प्रथम स्थान पर हितन्कर जैन उदयपुर एवं द्वितीय स्थान पर मन्थन गाला मुम्बई रहे। **बैडमिंटन प्रतियोगिता (युगल)** में प्रथम स्थान पर प्रतीक जैन विदिशा व पीयूष जैन टडा एवं द्वितीय स्थान पर आयुष जैन पीपरिया व जगदीशन चेन्नई रहे। **दौड़ प्रतियोगिता** (4X100) में प्रथम स्थान पर जयगोमटेश टीम एवं द्वितीय स्थान पर आत्मन् टीम रही। **दौड़ प्रतियोगिता (100 मीटर)** में प्रथम स्थान आयुष जैन पीपरिया एवं द्वितीय स्थान लक्षित जैन टोकर, **दौड़ प्रतियोगिता (200 मीटर)** में प्रथम स्थान आकाश हलाज एवं द्वितीय स्थान चैतन्य प्रकाश जैन गुढाचन्द्रजी, **दौड़ प्रतियोगिता (400 मीटर)** में प्रथम स्थान अचिन्त्य जैन ने एवं द्वितीय स्थान शैलेष बेलोकर ने प्राप्त किया। **रस्सीकूद प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान अमन जैन शास्त्री द्वितीय वर्ष एवं द्वितीय स्थान मंथन गाला मुम्बई ने प्राप्त किया।

सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष द्वारा हुआ। इस प्रकार संपूर्ण कार्यक्रम अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ●

खुशखबरी ! भव्य शुभारम्भ!!

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट गिरधरपुरा कोटा परिसर में
प्रेमचंद जैन बजाज चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन

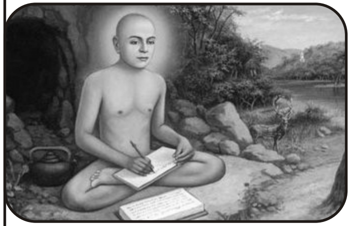

आचार्य समन्तभद्र

भव्य शुभारम्भ

(सोमवार, 2 अप्रैल 2018)

मुमुक्षु आश्रम, कोटा

आप सभी को सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष है कि श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा विगत 11 वर्षों से तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में संलग्न है और 2008 से शास्त्री अध्ययन हेतु आचार्य धरसेन महाविद्यालय का संचालन कर रहा है, मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट द्वारा ही लौकिक के साथ धार्मिक शिक्षण हेतु **आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन** का मंगल आरम्भ दिनांक 2 अप्रैल 2018 से हो रहा है, जिसमें 8वीं कक्षा से प्रवेश दिया जायेगा।

विद्यानिकेतन की मुख्य विशेषताएं

- अंग्रेजी माध्यम द्वारा सी.बी.एस.सी. के उच्च स्तरीय स्कूल में अध्ययन।
- लौकिक शिक्षण के साथ धार्मिक अध्ययन व चारित्रिक निर्माण का सुनहरा अवसर।
- **7वीं कक्षा में 90% से अधिक अंक सहित प्रवेश लेने वाले छात्रों को स्कूल फीस में 50% की छात्रवृत्ति।**
- **80% अंक से 10वीं उत्तीर्ण करने पर एवं शास्त्री महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रों को 8वीं, 9वीं एवं 10वीं - तीनों वर्षों की पूरी स्कूल फीस वापस।**
- सर्वसुविधायुक्त (लैट-बाथ अटैच) नवीन आवासीय परिसर।
- आवास, भोजन व बस आदि की उच्चस्तरीय सम्पूर्ण नि:शुल्क व्यवस्था।
- प्रतिवर्ष 24 छात्रों को प्रवेश।

नोट :- प्रवेश प्रक्रिया मार्च में संपन्न की जायेगी।

संपर्क सूत्र :- 9785643203, 7891563353, 7737979912, 8104597337

प्रवेश फार्म मंगाने हेतु संपर्क

बजाज पैलेस, पालीवाल कम्पाउण्ड, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा 324007 (राज.)

सिद्धचक्र महामंडल विधान संपन्न

फुटेरा-दमोह (म.प्र.) : यहाँ सकल दिगम्बर जैन समाज एवं तारण-तरण जैन समाज द्वारा दिनांक 20 से 27 दिसम्बर तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित आकेशजी उभेगांव, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ के प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में इन्द्रसभा, विरागजी शास्त्री द्वारा कथा पुराण की, श्री अमितजी बड़जात्या सूरत द्वारा भक्ति संध्या, 'क्रमबद्धपर्याय' विषय पर गोष्ठी, अहिंसा जैन पब्लिक स्कूल के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम में फुटेरा की सम्पूर्ण जैन समाज के अतिरिक्त जबेरा, अभाना, बकस्वाहा, तेजगढ, खड़ैरी, दमोह, जबलपुर, सागर आदि अनेक स्थानों से पधारकर सैंकड़ों साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित अशोकजी उज्जैन द्वारा विरागजी शास्त्री, वैभवजी जैन इन्दौर, नीरजजी शास्त्री व सम्मेदजी टीकमगढ के सहयोग से संपन्न हुये।

अठारहवाँ वार्षिकोत्सव संपन्न

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ बड़ा फुहारा स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैनमंदिर का 18वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 24 से 30 दिसम्बर तक हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ। श्रीमती सोमा जैन, राजीवजी-श्रेणिकजी परिवार द्वारा आयोजित इस वार्षिकोत्सव में डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित श्री समयसार महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा व्याख्यानों एवं विधान संचालन का लाभ मिला। साथ ही पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर एवं डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ के प्रवचन भी हुये। रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. श्रेणिकजी, डॉ. मनोजजी, विरागजी शास्त्री एवं अभिनयजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये।

पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव संपन्न

गढाकोटा (म.प्र.) : यहाँ पंचकल्याणक का द्वितीय वार्षिकोत्सव दिनांक 26 से 30 दिसम्बर तक मनाया गया।

इस अवसर पर डॉ.योगेशजी अलीगंज के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन ब्र. नन्हे भैया के निर्देशन में संपन्न हुआ।

– सचिन्द्र शास्त्री

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय की साप्ताहिक गोष्ठियों के अन्तर्गत दिनांक 23 दिसम्बर को 'समयसार कर्त्ताकर्माधिकार मीमांसा' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने की एवं मुख्य अतिथि के रूप में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल उपस्थित थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अमन जैन दिल्ली (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं प्रतीक जैन विदिशा (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। मंगलाचरण अभय जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष), संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के नमन जैन व पारस जैन ने तथा आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया। गोष्ठी का संयोजन पारस जैन, प्रशान्त जैन खेकड़ा एवं संयम जैन नागपुर ने किया।

नियमसार विधान संपन्न

द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 27 दिसम्बर 2017 से 1 जनवरी 2018 तक पण्डित अभयजी शास्त्री द्वारा रचित नियमसार मंडल विधान का आयोजन किया गया। विधानकर्त्ता के रूप में श्री महेन्द्रजी गंगवाल परिवार जयपुर उपस्थित थे।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के नियमसार पर सी.डी. प्रवचन हुये, जिनका पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई द्वारा विशेष स्पष्टीकरण किया गया। साथ ही ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा नियमसार के विभिन्न अधिकारों की विषयवस्तु का विवेचन किया गया। प्रात:काल डॉ. स्वर्णलताजी नागपुर द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर बच्चों की कक्षा ली गई। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयजी देवलाली द्वारा संपन्न हुये।

प्रकाशन तिथि : 13 जनवरी 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com